अतिशय क्षेत्र पर धार्मिक अनुष्ठान का फल हजार गुना एवं सिद्ध क्षेत्र पर अनंत गुना बढ़ जाता है – मुनि सुव्रत सागर

विशाल जैन पवा, तालबेहट। सिद्ध क्षेत्र पावागिरीजी की पावन धरा पर राष्ट्रसंत आचार्य प्रवर विद्यासागरजी महाराज के परम प्रभावी शिष्य वात्सल्य मूर्ति मुनिश्री सुव्रत सागरजी महाराज का 16वां आध्यात्मिक वर्षायोग प्रारंभ हो गया है, चातुर्मास की मंगल कलश स्थापना के अवसर पर सुबह अतिशय युक्त चमत्कारी बाबा मूलनायक भगवान पारसनाथ स्वामी का मस्तिकाभिषेक हुआ, जिसमें भारी संख्या में श्रद्धालुओं ने पहुंचकर पुण्यार्जन किया तथा विश्व शांति और आत्मकल्याण की भावना के साथ मंत्रोच्चार के मध्य शांतिधारा की। दोपहर में मंगल कलश स्थापना कार्यक्रम के प्रारंभ में देवाज्ञा काशीराम ज्ञानचन्द्र जैन पुरा ने ली, तत्पश्चात ध्वजारोहण निर्मल कुमार गौरव जैन विरधा ने किया। आचार्यश्री एवं मूलनायक भगवान के चित्र का अनावरण बा.ब्र. संजय भैया मुरैना अशोक भैया लिघौरा, राजेश भैया टड़ा एवं विनोद शास्त्री बबीना ने किया। रजनी दीदी, सरिता दीदी एवं प्रीति दीदी सहित ब्रह्मचारिणी बहिनों ने ज्ञान द्वीप प्रज्वलन कर मंगलाचरण में आचार्यश्री की वंदना की। मुनिश्री सुव्रत सागर ने धर्मसभा को संबोधित करते हुए कहा कि चातुर्मास श्रमण संस्कृति की परम्परा है, जिसका निर्वहन प्रत्येक साधु को करना पड़ता है, आत्मा की साधना में सभी के सहयोग की आवश्यकता होती है। चातुर्मास की बेला में साधु चार माह तक एक ही स्थान पर रहकर धर्म की प्रभावना एवं आत्मा के कल्याण की साधना करते है। जिसमें गुरु–शिष्य, भक्त–भगवान और पतित–पावन का संयोग होता है। अतिशय क्षेत्र पर धार्मिक अनुष्ठान का फल हजार गुना एवं सिद्ध क्षेत्र पर अनंत गुना बढ़ जाता है। मुनिश्री के 16वे वर्षा योग के अवसर पर 16 कलशों की स्थापना की गयी। मुनिश्री का पाद प्रक्षालन जैन समाज पिपरई एवं शास्त्र भेंट महामंत्री जयकुमार कंधारी ने किया। राजकुमार जैन पवा ने सभा का संचालन कर कहा कि अब तक का चौथा एवं अद्वितीय वर्षायोग होगा। प्रत्येक माह की 15 तारीख को आयोजित होने वाला पारसनाथ दरबार लगाया गया, जिसमें दुख दर्द निवारण एवं मनोकामना पूर्ति के लिए श्रद्धालुओं ने विशेष पूजन अर्चना की।

ग्रीष्मकालीन शिविर में महिलाओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

ललितपुर। समाज मेंअपनी अहम भूमिका निभाने वाले महिलाएं जो हर काम में रुचि लेकर समाज को सशक्त बनाने का सफलतम प्रयास करती रहती है। इसी प्रयास के चलते दिगम्बर जैन महासमिति ब्राह्मी सुंदरी महिला संभाग द्वारा पांच दिवसीय ग्रीष्मकालीन प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया।शिविर के दौरान सभी महिलाओं ने बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया । पाक कला ही नहीं वरन् अन्य कलाओं के बारे में भी जानकारी दी गई। शिविर के समापन के दिन मेले का आयोजन किया गया। जिसमें समिति सदस्यों द्वारा विभिन्न स्टालों पर स्वादिष्ट व्यंजन मेले में आये अतिथियों को परोसे गये। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्रेयांस जैन व संचालन नीता दिवाकर ने किया। निर्मला चौधरी उत्तरांचल महासमिति प्रकोष्ठ मंत्री ने सभी का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि हमें समाज में हर समय अग्रणी रहना चाहिए। इस अवसर पर समिति पदाधिकारियों संगीता जैन, इन्द्रा, जयश्री, नेहा, पुष्पा, ज्योति, डॉ. सरिता, अनुपमा, मंजू जैन की विशेष उपस्थित रही।

जबलपुर। अ.भा. महिला परिषद मुनि सुव्रत शाखा बडा जैन में आयोजित किया। इसमें मंदिर हनुमान ताल, जबलपुर के नेतृत्व में श्रीमती अमीषा–विवेक भाईजी ने ग्रीष्म कालीन शिविर श्री पार्श्वनाथ दि. जैन बड़ा मंदिर में पेन्टिंग, मेंहदी, कुकिंग, केलीग्राफी, कार्टून, राइटिंग आदि सिखाकर समाज की महिलाओं को प्रशिक्षण दिया एवं श्रीमती बिंदिया वैभव ने मंदिरजी में रात्रि पाठशाला प्रारंभ कर रोज अनेक बालक बालिकाओं को जैन धर्म का ज्ञान एवं संस्कार दे रही है। श्री प्रदीपकुमार–किरण जैन की दोनो पुत्रवधुओं ने इस शिविर को सफलतापूर्वक संचालित किया।

सम्मान व्यक्ति में नई ऊर्जा का संचार करता है – आचार्य ज्ञानसागरजी

डॉ. कपूरचंद जैन, खतौली। परम पूज्य सराकोद्धारक आचार्य श्री 108 ज्ञानसागरजी महाराज के पावन सानिध्य में अ.भा.दि. जैन शास्त्री परिषद का प्रशिक्षण शिविर और अधिवेशन श्री कुन्दकुन्द जैन पी.जी. कॉलेज के विशाल सभागार में डॉ. श्रेयांस कुमार जैन की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। अधिवेशन का संचालन ब्र. जयकुमार निशांत ने किया। जैन साहित्य, शिक्षा, विधि विधान, इतिहास, शाकाहार, समाज सेवा आदि में विशिष्ट योगदान देने वाले महानुभावों को 11000–11000 हजार रुपये की राशि देकर सम्मनित किया गया। सभी पुरस्कार खतौली नगर पालिका के युवा चेयरमेन श्री पारस जैन तथा अन्य विशिष्ट महानुभावों के कर कमलों द्वारा प्रदान किये गये। पुरस्कार वितरण समारोह का संचालन पुरस्कार संयोजक डॉ. कपूरचंद जैन, खतौली ने किया। संजीव कुमार जैन, अहमदाबाद के मंगलाचरण से प्रारंभ हुए कार्यक्रम में डॉ. कपूरचंद जैन ने पुरस्कार योजना का परिचय दिया। डॉ. श्रेयांस जैन ने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि पुरस्कारों से कार्यकर्ताओं का उत्साह बढ़ता है, उनमें नवीन ऊर्जा का संचार होता है। पूज्य आचार्य श्री ने सभी को आशीर्वाद प्रदान करते हुए कहा कि व्यक्ति के कार्य का आकलन उसमें एक नई ऊर्जा का संचार करता है। पुरस्कार/सम्मान प्राप्तकर्ता पुन: कुछ नया करने के लिए सन्नद्ध हो जाता है। शास्त्री परिषद् की यह योजना अनूठी है, इसे कायम रखें।

प्रशस्ति पत्र का वाचन डॉ. ज्योति जैन ने किया, महामंत्री ब्र. जयनिशांत जैन ने सम्मान राशि के चेक भेंट किये। कार्यक्रम में डॉ. जयकुमार एवं डॉ. नरेन्द्रकुमार ने विचार व्यक्त किये।

शब्द जाल प्रतियोगिता – 5

नीचे दिये गये वाक्य दिये गये है इनका उत्तर एक शब्द में देना हैजो उल्टा सीधा एक समान हैं।

		उत्तर यहां लिखे
1)	जो नया हो उसे कहते है	–
2)	भारत का एक शहर जो उड़ीसा में है	–
3)	नृत्य करने की क्रिया	–
4)	एक लचीली वस्तु	–
5)	जो सबका प्यारा हो	–
6)	नमस्कार को यह भी कहते है	–
7)	टमाटर को अंग्रेजी मे कहते है	–
8)	किसी घटना की जानकारी लेना	–
9)	वनस्पति घी वाली एक कंपनी का नाम	–
10)	सोने को यह भी कहते है	–

निम्नलिखित पते पर भेजें – **'गोलालारीय दर्शन'** 64, न्यू देवास रोड, इन्दौर । प्राप्त सही प्रविष्टियों का ड्रा निकालकर प्रथम 5 विजेताओं को पुरस्कृत किया जावेगा, आगामी अंक में उनके फोटो भी प्रकाशित किये जायेंगे। * **नियम** – प्रतियोगिता 8 वर्ष से 13 वर्ष तक के बच्चों के लिए ही है। प्रविष्टि भेजने की **अंतिम तिथि 15 सितम्बर 2014** सही जवाब के साथ वर्ष 2014 की अंकसूची की फोटोकॉपी (जिसमें जन्म दिनांक अंकित हो) पर अभिभावक का नाम, टेलीफोन नंबर एवं प्रत्याशी का नवीन फोटो अवश्य भेजें। संपादक मंडल का निर्णय अंतिम एवं सर्वमान्य होगा।

नोट – स्थानाभाव के कारण प्रतियोगिता 3 एवं 4 के विजेताओं के नाम एवं फोटो आगामी अंक में प्रकाशित किया जायेगा। विजेताओं को डाक द्वारा पुरस्कार प्रेषित कर दिये गये है।

आगामी अंक – अक्टूबर 2014 का अंक में क्षमावाणी पर्व एवं प्रतिभा सम्मान समारोह की गतिविधियों से संबंधित रहेगा। दिसम्बर 2014 गत वर्षानुसार इस वर्ष भी विवाह योग्य प्रत्यांशी विशेषांक रहेगा।

* विनम्र श्रद्धांजली *

श्री शांतकुमार जैन का निधन 28 जून को 82 वर्ष की उम्र में जैतवारा (सतना) मे हो गया। स्पष्ट वक्ता के रुप मे आपकी अलग ही पहचान थी, आप विकास जैन (प्रतिनिधि – गोलालारीय दर्शन, सतना आंचल) के पूज्य पिताजी थे। गोलालारीय दर्शन परिवार विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करता है।